ऑनलाइन शिक्षण में प्राध्यापकों की रुचि का अध्ययन

डॉ वंदना मिश्र[1], डॉ सिद्धार्थ सैनी[2]
[1]सहायक प्राध्यापक, श्री वैष्णव वाणिज्य महाविद्यालय, इंदौर (म.प्र.) भारत
[2]सहायक प्राध्यापक, आनन्दविहार कॉलेज फॉर वूमेन, भोपाल (म.प्र.) भारत

सारांश

शिक्षण जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है क्योंकि अच्छी शिक्षा ही आपके कैरियर को दिशा प्रदान कर सकती है। यदि हम प्राचीन समय की बात करें तो शिक्षा के शिक्षण में आज पहले की तुलना में बहुत अंतर नजर आता है, साथ ही शिक्षा के नियमों में भी बदलाव आया है। चाहें वो किसी सकारात्मक विचारों के वजह से हो या किसी महामारी के कारण जैसे कि– वर्तमान में कोरोना जैसी महामारी को देखते हुए शिक्षा के रूप में काफी बदलाव आया है। आज अगर हम देखे तो वर्तमान में ऑनलाइन शिक्षा का बोलबाला है। ऑनलाइन एक ऐसा माध्यम है जिसमें दूर रहकर देश के किसी भी कोने से शिक्षक अपने विद्यार्थियों को पढ़ाने में समर्थ रहते हैं। इंटरनेट की दुनिया में नए एप आए, जैसे –गूगल मीट, माइक्रोसॉफ्ट टीम्स, जूम आदि, इसमें से किसी भी एप को अपना माध्यम बनाकर विद्यार्थियों से जुड़ा जा सकता है। लॉकडाउन के समय जबकि सभी शिक्षा केंद्रों को बंद कर दिया गया था। ऑनलाइन शिक्षा ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन किया। उपरोक्त शोध पत्र में ऑनलाइन शिक्षण के प्रभावो का अध्ययन किया गया है।

कुंजी शब्द– ऑनलाइन–तकनीकी माध्यम से सीधा संम्पर्क कोरोना–महामारी

I ऑनलाइन शिक्षण में प्राध्यापकों की रुचि का महत्व

अच्छी शिक्षा ही आपके कैरियर को दिशा प्रदान कर सकती है यदि हम प्राचीन समय की बात करें तो आज की तुलना में शिक्षा के नियमों में भी काफी बदलाव आया है, जैसे कि वर्तमान में कोरोना जैसी महामारी को देखते हुए शिक्षा के रूप में काफी बदलाव आया, आज अगर हम देखे तो ऑनलाइन शिक्षा का बोलबाला है।

यह एक ऐसा माध्यम है जिसमें हम दुनिया के किसी भी कोने में अपने विद्यार्थियों को पढ़ाने में समर्थ रहते हैं, ऑनलाइन शिक्षा के लिए एप जैसे गूगल मीट, टीम गूगलमीट,माइक्रोसॉफ्ट टीम्स रूम इसमें से किसी को भी अपना माध्यम बनाकर विद्यार्थियों से जुड़वा सकता है। ऑनलाइन शिक्षा को 93 में कानूनी मान्यता प्राप्त हो गई थी जो वर्तमान में बहुत कारगर सिद्ध हुई आज की स्थिति को हम देखते हैं तो विद्यार्थी एवं प्राध्यापक दोनों ही महाविद्यालय जा पा रहे हैं, ऐसे में ऑनलाइन शिक्षा ने नया रास्ता दिखायाहै। आजकल ज्यादातर प्रोफेशनल कोर्सेज की ट्रेनिंग भी ऑनलाइन के माध्यम से की जाती है और सर्टिफिकेट भी प्रदान किए जाते हैं इसमें यह सुविधा होती है कि विद्यार्थी प्राध्यापक आसानी से एक दूसरे से संपर्क कर सकते हैं वही विद्यार्थी, प्राध्यापक के व्याख्यानओं को समय–समय पर सुन सकते हैं ऑनलाइन शिक्षा की तरफ विद्यार्थी ज्यादा आकर्षित हो रहे हैं क्योंकि यह सुविधाजनक होने के साथ–साथ समय और पैसे की बचत करता है ऑनलाइन शिक्षा उन लोगों के लिए विकल्प है जो परिवार की देख रेख करते हुए पढ़ते है।

II ऑनलाइन शब्द की अवधारणा

जब हम प्राचीन काल मे गुरुकुल या आश्रम मे अध्ययन करने जाते थे और आचार्य के समक्ष बैठकर विद्या ग्रहण करते थे।इसी प्रकार ऑनलाइन शिक्षा तंत्र में इसे शिक्षण का नवीनतम रूप माना जाता है, जब विद्यार्थी अपने प्राध्यापक से इंटरनेट, लैपटॉप या सेलफोन के द्वारा मिलते हैं और अपना शिक्षण कार्य प्राप्त करते है।

कहा जाता है कि वर्ष 1993 से ऑनलाइन मंच को शिक्षण कार्य करने का सशक्त माध्यम बनाए जाने पर जोर दिया गया। ऐसी शिक्षा को दूरस्थ शिक्षा कहा जाता हैं. इसके द्वारा जो भी पाठ्यक्रम निर्धारित किया जाता है उसे वीसीआर, डीवीडी और इन्टरनेट के द्वारा पढ़ाया जाता है। सरकारी नौकरी जैसे सिविल सर्विस, इंजीनियरिंग और मेडिकल, कानून आदि का शिक्षण कार्य भी कई कोचिंग संस्थानों में ऑनलाइन मंच से करवाया जा रहा है।

III विधि

उपरोक्त शोध पत्र में सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है।

विभिन्न महाविद्यालय के अध्यापकों से ऑनलाइन प्रश्नावली के माध्यम से सर्वेक्षण किया गया है।

IV उद्देश्य

(क) ऑनलाइन शिक्षा बेहतर माध्यम है इसका पता लगाना।

(ख) शिक्षा प्रणाली ऑनलाइन और ऑफलाइन की तुलना करना।

(ग) ऑनलाइन शिक्षा के महत्व बतलाना!

V परिकल्पना

(क) ऑनलाइन शिक्षा विकल्प है

(ख) दोनों शिक्षा प्रणाली बेहतर है

(ग) ऑनलाइन शिक्षा बेहतर नहीं है

VI ऑनलाइन शिक्षा के प्रभाव

(क) सकारात्मक

(i) प्रभावी शिक्षणः– ऑनलाइन शिक्षण प्रभावी होता है। इससे विद्यार्थियों पर अच्छा प्रभाव पड़ता है।

(ii) समय की पाबंदी नहीं:– इसमे समय की पाबंदी नही होती है प्राध्यापक अपने अनुसार पड़ा सकते है। समय की बचत भी होती है।

(ख) नकारात्मक

(i) रचनात्मकता की कमी :– ऑनलाइन शिक्षण से विद्यार्थियों में रचनात्मकता की कमी आ गयी ।

(ii) इंटरनेट की समस्याः:– दूर दराज गांव में कई स्थानों पर इंटरनेट न होने की समस्या ऑनलाइन शिक्षण में व्यवधान पैदा करती है।

(iii) प्राध्यापकों में तकनीकी कौशल का अभाव पाया जाता है वो तकनीकी का ठीक से उपयोग नही कर पाते है ।

(iv) प्रतिस्पर्धा में कमी :– ऑनलाइन शिक्षण से विद्यर्थियों में प्रतिस्पर्धा में कमी आ रही है जिससे उनका मानसिक स्तर गिर रहा है।

(v) आत्म मूल्यांकन की कमी :– ऑनलाइन शिक्षण से विद्यार्थियों और शिक्षक में आत्ममूल्यांकन की कमी आ गयी है।

(vi) उत्साह की कमी :– पढ़ाई के प्रति विद्यार्थियों में उत्साह की कमी आयी क्योकि वह भौतिक रूप से नही जुड़े होने के कारण वह उत्साह से कक्षा की गतिविधियों में भाग नही ले पाते है।

VII प्रश्नावली का आकलन और विश्लेषण

शोध के अंतर्गत हमने पाया कि

(i) 50 प्रतिशत वाणिज्य संकाय के प्राध्यापकों के द्वारा अपना मत प्रस्तुत किया गया।

(ii) 20 प्रतिशत अंग्रेजी भाषा के पेपर के द्वारा अपना मत प्रस्तुत किया गया।

(iii) 30 प्रतिशत हिंदी भाषा के प्राध्यापकों के द्वारा अपना मत प्रस्तुत किया गया

इससे यह पता चला कि सभी प्राध्यापक 1 वर्ष की अवधि से शिक्षा पद्धति का उपयोग कर रहे हैं विश्व में सबसे अधिक माइक्रोसॉफ्ट टीम्स का उपयोग करते पाए गए एवं दूसरे नंबर पर गूगल मीट जूम का उपयोग किया गया। ऑनलाइन शिक्षण का अनुभव औसत रहा!

VIII ऑनलाइन शिक्षण में नए–नए साधन

(क) जैसे पॉवरपॉइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से ज्ञान अर्जन, एक्सेल प्रायोगिक सवाल का प्रत्यक्ष प्रदर्शन, ऑनलाइन वेबसाइट्स की विषय सामग्री का सीधा प्रसारण कर व्यावहारिक ज्ञान अर्जन करना इत्यादि, जबकि यह ऑफलाइन शिक्षण में संभव नहीं।

(ख) ऑनलाइन शिक्षण समय और दूरी के अंतर को समाप्त कर देता है, जिससे विद्यार्थी की साक्षात् उपस्थिति आवश्यक नहीं है, वह अपने घर से कहीं दूर बैठे ही शिक्षा का लाभ ले सकता है, जबकि ये ऑफलाइन शिक्षण में संभव नहीं।

(ग) ऑफलाइन शिक्षण में प्रत्येक विद्यार्थी के व्यवहार अनुसार शिक्षण पद्धति में बदलाव कर शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता!

इसके अतिरिक्त शोध के दौरान यह पाया गया कि ऑनलाइन शिक्षण की पद्धतिसे व्यावहारिकता में कमी, विद्यार्थियों में व्यक्तिगत संवाद की कमी व प्रभावी संचार कमीको दर्शाता है

ऑनलाइन शिक्षण पद्धति में विद्यार्थी की सहभागिता लगभग 50 प्रतिशत मापी गयी।

IX ऑनलाइन शिक्षण प्रणाली में मुश्किलें और सफलताए

वर्तमान में ऑनलाइन शिक्षण मंच प्रणाली से अध्ययन कराना इतना सरल कार्य नही है द्य अभी तो यह प्रारम्भिक स्थिति मे है।कोरोना जैसी महामारी के कारण महाविद्यालययो और अन्य शैक्षणिक संस्थाओं में विद्यार्थियों को इसके अनुसार ढालना बहुत कठिन कार्य है। इंटरनेट सुविधा वर्तमान समय मे केवल कुछ विद्यार्थियों तक ही पहुँच पायी है।सभी विद्यार्थी इसका उपयोग नही कर पा रहे हैओर भी कई समस्याएं है जैसे इंटरनेट स्पीड से न चलना। आज कल कई ट्रस्ट के अपने व्यक्तिगत विश्वविद्यालय है जिसमे अलग –अलग पाठच्क्रम चलते है और उनके अनुरूप शिक्षा दी जाती है। हमारे समक्ष आज हर पाठच्क्रम का अलग होना एक बड़ी समस्या है,इतने विषय ऐसे है कि उनमें व्यहवारिक शिक्षण के द्वारा ही शिक्षण कार्यकरवाया जाता है। आधुनिक तकनीकी को समझ पाना भी एक बडी समस्या है सच कहें तो यह शिक्षण को प्रभावी बनाने का ही माध्यम है।

वर्तमान में यदि हम ऑनलाइन शिक्षण में सफलताओ को देखे तो वर्तमान में इस शिक्षण के प्रयोग दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। प्रतिस्पर्धा की तैयारी कर रहे विद्यार्थीयो व संस्थाओं में इसका उपयोग बढ़ता दिखाई दे रहा है। अन्य शिक्षा संस्थानो में भी इसका इस्तेमाल हो रहा है। भविष्य कहता है कि आने वाला समय ऑनलाइन शिक्षण कार्य के लिए सफलता के नये आयामो को छुएगा।

X निष्कर्ष

अंत मे शोध के विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि दोनों पद्धति का अपना महत्व है दोनो एक दूसरे की पूरक है। कोई भी एक दूसरे का स्थान नहीं ले सकटी। अच्छी गुणवत्ता वाले शिक्षण कार्य हेतु दोनों को मिश्रित प्रयोग करना अति आवश्यक है!

ऑनलाइन शिक्षण में दोनो प्रकारों को समझना अतिआवश्यक है। पहला ऑनलाइन शिक्षण के चलते अभी शिक्षा के क्षेत्र में ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म, लर्निंग ऐप, सॉफ्टवेयर इंजीनियर इत्यादि की मांग बढ़ती जा रही है। दूसरी दृष्टि में कहा जाए तो ऑनलाइन शिक्षण, इस कोरोना काल मे लोगो को रोजगार उपलब्ध कराने मे उपयोगी सिद्ध हो रही है। इस तरह पेशेवर व्यक्ति अपने समर्थ में वृद्धि कर सकता है। इससे यह ज्ञात होता है कि आधुनिक माध्यमो से दी जाने वाली शिक्षा को शिरे से नकारा नही जा सकता। अन्य पक्ष यह भी है कि ऑनलाइन शिक्षण छात्रो के व्यक्तित्व निर्माण में अवरोध पैदा कर रही है। यह ज्ञान प्राप्ति का साधन तो है परंतु विद्यार्थियों का सामाजिक,नैतिक तर्क करने की क्षमता खत्म होती जा रही है। कक्षा में शिक्षण विद्यार्थीयो के दृष्टिकोण में बदलाव लाता है। परंतु इसके अत्यधिक प्रयोग से वह समाज से विरक्त हो जाता है। भारत देश मे आज भी कई परिवार ऐसे है जो आर्थिक रूप से इतने सक्षम नही है कि ऑनलाइन शिक्षा का खर्च उठा सके इसलिये सरकार को इस महामारी को देखते हुए अपनी शिक्षा नीति में बदलाव करना चाहिये जिससे ऑनलाइन शिक्षण को प्रभावी बनाया जा सके एवं देश के कोने –कोने के विद्यार्थियों को लाभ मिल सके।

संदर्भ सूची

[1] शिक्षा तकनीकी :– एच. के .मंगल

[2] शिक्षा अनुसंधानः– आर .के .शर्मा

[3] इंटरनेट

[4] सर्वेक्षण

[5] पत्र पत्रिका